भट्टारक पद्मनन्दि

जीवन-परिचय : आचार्य पद्मनन्दि, भट्टारक और मुनि-दो विशेषणों द्वारा अभिहित हैं। मुनि पद्मनन्दि भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य थे।

अनेक पट्टावलियों और प्रशस्तियों के आधार पर आचार्य पद्मनन्दि का समय ई. सन् की 14वीं शती है।

रचना-परिचय : भट्टारक पद्मनन्दि की अनेक रचनाएँ हैं—

1. जीरापल्ली पार्श्वनाथ स्तवन : इस स्तोत्र में जीरापल्ली स्थित देवालय के मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गयी है। इसमें 10 पद्य हैं।

2. भावनापद्धति : इस रचना का दूसरा नाम भावनाचतुस्त्रिंशतिका भी है। 34 पद्यों की यह भावपूर्ण स्तुति है।

3. श्रावकाचारसारोद्धार : इस ग्रन्थ में गृहस्थ विषयक आचार का वर्णन है। इसमें तीन परिच्छेद हैं।

4. अनन्तव्रतकथा : इस कथा में अनन्तचतुर्दशी के व्रत को सम्पन्न करने वाले फलाधिकारी व्यक्ति की कथा वर्णित है। इसमें 85 पद्य हैं।

5. वर्द्धमानचरित : इस संस्कृत-ग्रन्थ में तीर्थंकर वर्द्धमान का इतिवृत्त वर्णित है। इसमें अनुमानत: 300 पद्य हैं।

आचार्य पद्नन्दि की रचनाओं में भक्ति सम्बन्धी आदर्श उच्च कोटि का पाया जाता है। इन्होंने अनेक देशों, ग्रामों, नगरों आदि में विहार कर जनकल्याण का कार्य किया है, लोकोपयोगी साहित्य का निर्माण तथा उपदेशों द्वारा सन्मार्ग दिखलाया है। वर्षों तक साहित्य का निर्माण, शास्त्र-भंडारों का संकलन और प्रतिष्ठादि कार्यों द्वारा जैन संस्कृति को उन्नत करने का प्रयास किया है।